आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

• मुद्रण तारीख – 11-06-2016 • अंक- 552 • तारीख – 12 जून 2016, ज्येष्ठ शुक्ल 8 • रविवार • उदयपुर • कुल पृष्ठ-02 • मूल्य-1 रूपया

सत्य साई अनमोल वचन

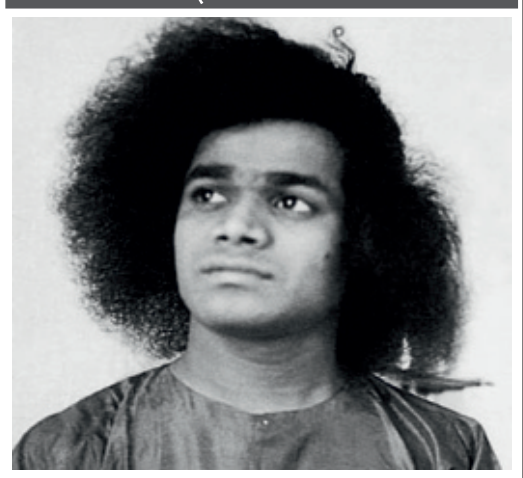

Hkxoku dk fojkV :i

भगवान के विराट रूप के दर्शन के वही व्यक्ति अधिकारी हैं जो अपने अहम् को ईश्वरार्पण कर, ईश्वर की ही शरण लेते हैं (जैसे अर्जुन ने किया) तथा जो मौन भाव में ईश्वर द्वारा कही गई गीता को ध्यानपूर्वक ग्रहण करते हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है, वह विश्व के प्रत्येक प्राणी का अन्तःप्रेरक है।– lR; lkbZ ckck

शिव वंदना

भला बुरा सबका सुनिये, ये भली बात सबूरी में मन लागो मेरो यार फकीरी में। शिवजी ने कंठ में विष रखा है। उसी प्रकार हे युवक! यौवनास्था में तुझे विष पीना पड़ेगा। कड़वे घूँट पीने का समय आयेगा। तब विष अन्दर भी मत जाने देना और बाहर भी मत निकालना। बाहर निकालेगा तो तेरा परिवार दुःखी होगा। अन्दर रखेगा तो तू जल जायेगा। अतः शिवजी की तरह गले में रख। नीलकंठ बन। शिवजी ने गले में विषधर नाग रखा है। उसी प्रकार हे युवक! अलंकारों को विषघट नाग समझना। शिवजी ने अंग पर भस्म लगाई है। तो युवकों याद रखना कि एक बार भस्म हो जाना है। इस प्रकार शिवजी की वंदना कर।

दोहावली

jke uke fut ey g]
dg dchj le>k;A
nkbZ nhu [kkt r fQj]
ije i#"k ufg ik;AA

इस संसार सागर में राम का नाम ही मुख्य है अर्थात सत्य स्वरुप राम का नाम ही मोक्ष प्राप्त करने का आधार है। हिन्दू और मुसलमान भेदभाव के भ्रम में पड़कर खोजते फिरते हैं अर्थात् हिन्दू राम को ढूंढते हैं और मुसलमान अल्लाह को जबकि दोनों एक हैं।

pg vdk'k irky tk]
QkfM tkg cgek.MA
dg dchj fefVg ugh]
ng /kj dk n.MAA

कबीर दास जी जीव को समझाते हुए कहते हैं कि चाहे आकाश पाताल में ले जाओ या ब्रह्माण्ड फोड़कर निकल जाओ किन्तु तुम्हें शरीर धारण करने का दण्ड भोगना ही होगा अर्थात् प्रारब्ध का भोग भोगना ही होगा चाहे कोई भी उपाय करो।

हरि सुमिरन

volj ikdj xuxuk]
gfj lfeju e >eA
eLr exu rkyh ctk]
>e&>e dj >eAA

HkkokFk & मनुष्य को भक्ति भावना में नित्य गुनगुनाना चाहिए। भगवान के स्मरण में झूम–झूम कर मनन, भजन, गुणगान करना चाहिए। मस्त और मगन होकर तालियां बजा–बजा अपने प्रेम का प्रदर्शन करना चाहिए। ये सभी भक्ति श्रेष्ठ के लक्षण हैं।

आओ नर रूपी नारायण की सेवा करें

आओ आज हम सेवा के माध्यम से ज्ञान को हासिल करें। जिसके प्राप्त हो जाने पर, इस धरती पर सत्कार्यों के माध्यम से स्वर्गिक सुख की प्राप्ति होती है। राम हमारे हृदय में, मर्यादा आचरण में, हमारा देह ही देवालय हो। अपने पुरुषार्थ से ही हम पुरुषोत्तम होने का प्रयास करें तो हमें पता चलेगा कि अयोध्या हमारी है और हम नर रूपी नारायण की सेवा करते है।

फीफा विश्व कप देगा 1.50 लाख भारतीय कुशल श्रमिकों को नौकरी

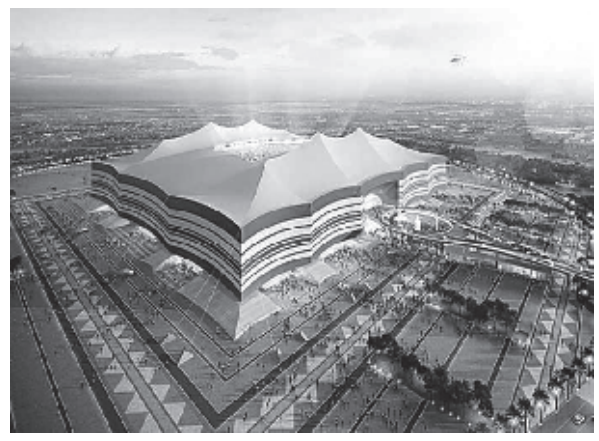

वर्ष 2022 में कतर में होने वाले फीफा वर्ल्ड कप में 1.50 लाख भारतीयों को नौकरी मिलने की संभावना हैं। वर्ल्ड की तैयारियों को लेकर बड़े पैमाने पर होने वाले निर्माण कार्य के लिए लगभग डेढ़ लाख भारतीय कुशल श्रमिकों का रास्ता खुलने वाला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कतर यात्रा के दौरान इस मुद्दे पर अहम बातचीत होनी है। पिछले कुछ वर्षों में कतर ईंधन और गैस के व्यापार के साथ भारत के लिए सामरिक लिहाज से भी अति महत्वपूर्ण देश बनकर उभरा है।

सुरक्षा और आतंकवाद पर भी कतर के साथ अहम फैसले होने हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल भी पीएम मोदी के साथ यात्रा कर रहे हैं। हालांकि सूत्रों की माने तो वर्ल्ड कप के लिए कई भारतीय कंपनियां पहले से कतर में काम कर रही हैं। मगर कुशल मजदूरों की आपूर्ति के लिए बांग्लादेश पहले से जुगत में लगा रहा है। सूत्रों ने बताया कि कतर में फिलहाल लगभग तीन लाख कुशल मजदूरों की मांग है। भारत चाहता है कि इसमें से आधे मजदूरों की आपूर्ति यहां से हो। गौरतलब है कि कतर में सिर्फ चार लाख मूल नागरिक हैं, लेकिन वहां की जनसंख्या लगभग 25 लाख है। यानी तेल और गैस से काफी धन इकट्ठा कर चुके इस देश में दुनियाभर के लगभग 21 लाख लोग काम करते हैं। इनमें से तकरीबन सात लाख लोग अकेले भारत से हैं। कतर में भारत के लोगों में लगभग 90 फीसदी केरल के नागरिक हैं। सूत्रों के मुताबिक सरकार की योजना है कि कतर में कुशल श्रमिकों की आपूर्ति भारत के अन्य क्षेत्रों से भी हो।

चिन्तन – मनन

धन की प्राप्ति के उद्देश्य से कार्य करने पर मन संसार में रम जाता है, इसलिये सांसारिक कार्य बड़ी सावधानी के साथ केवल भगवत्प्रीति के लिए ही करना चाहिये। इस प्रकार से भी अधिक कार्य न करें, क्योंकि कार्य की अधिकता से उद्देश्य में परिवर्तन हो जाता है।

सांसारिक पदार्थों और मनुष्यों से मिलना–जुलना कम रखना चाहिये। संसार संबंधी बातें बहुत ही कम करनी चाहिये। बिना पूछे न तो किसी के अवगुण बताने चाहिये और न उनकी ओर ध्यान ही देना चाहिये।

आत्म–जागरण ही सच्ची चेतना है

हमारे जीवन की विडम्बना यही है कि हम शारीरिक रूप से तो जागते रहते हैं, लेकिन चेतना के स्तर पर उसी तरह सोए रहते हैं, जैसे कि शकुन्तला सो गई थी। जागते हुए जब जागने का एहसास हो, तो यह सजग होने की पहली सीढ़ी है। उठने के साथ ही तो हमें एहसास हो जाता है कि हम जग गए। लेकिन इसके कुछ मिनट बाद ही यह एहसास तिरोहित हो जाता है। फिर हम रूटीन के कामों में लग जाते हैं।

सजगता का दूसरा चरण वह है जब हमारी चेतना जागने के एहसास से ऊपर उठकर करने के एहसास तक पहुँच जाती है। अब हम जाग तो गए हैं, लेकिन जागकर कर क्या रहे हैं। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, यदि हमारी चेतना उस करने का साथ दे रही है तो यह सजगता का दूसरा चरण हुआ। शकुन्तला के उदाहरण के मामले में हम कह सकते हैं कि वह सजग थी, लेकिन अपने प्रियतम की याद के प्रति। प्रियतम की स्मृति के प्रति तो वह इतनी अधिक सजग थी (जिसे हम सब इस भाषा में कहते हैं कि 'वह याद में खोयी हुई थी') कि उसे अपने आसपास की घटनाओं का एहसास ही नहीं रह गया था।) उसका मतलब यह हुआ कि वह भौतिक रूप से असजग थी, किन्तु मानसिक रूप से सजग थी। अब यह बात अलग है कि उसकी यह बात आम जीवन के लिए अव्यावहारिक सिद्ध हुई।

बालश्रम निषेध दिवस (दिवस विशेष)

बाल मजदूरी के प्रति विरोध एवं जगरूकता फैलाने के मकसद से हर साल 12 जून को बाल श्रम निषेध दिवस मनाया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के जागरूकता पैदा करने के लिए 2002 में विश्व बाल श्रम विरोधी दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की।

10 अक्टूबर 2006 तक बालश्रम को इस असमंजस में रखा गया, कि किसे खतरनाक और किसे गैर खतरनाक बाल श्रम की श्रेणी में रखा जाए। उसके बाद इस अधिनियम 1986 में संशोधन कर ढाबों, घरों, होटलों में बालश्रम करवाने को दंडनीय अपराध की श्रेणी में रखा गया।

दरअसल 1979 में सरकार व्दारा बाल मजदूरी को खत्म करने के उपाय के रूप में गुरूपाद स्वामी समिति का गठन किया गया। जिसके बाद बालश्रम से जुड़ी सभी समस्याओं के अध्ययन के बाद गुरूपाद स्वामी समिति द्वारा रिफारिश प्रस्तुत की गई, जिसमें गरीबी को मजदूरी के मुख्य कारण के रूप में देखा गया और ये सुझाव दिया गया, कि खतरनाक क्षेत्रों में बाल मजदूरी पर प्रतिबंध लगाया जाए एवं उन क्षेत्रों के कार्य के स्तर में सुधार किया जाए। समिति व्दारा बाल मजदूरी करने वाले बच्चों की समस्याओं के निराकरण के लिए बहुआयामी नीति की जरूरत पर भी बल दिया गया।

1986 में समिति के सिफारिश के आधार पर बाल मजदूरी प्रतिबंध विनियमन अधिनियम अस्तित्व में आया, जिसमें विशेष खतरनाक व्यवसाय व प्रक्रिया के बच्चों के रोजगार एवं अन्य वर्ग के लिए कार्य की शर्तो का निर्धारण किया गया। इसके बाद सन 1987 में बाल मजदूरी के लिए विशेष नीति बनाई गई, जिसमें जोखिम भरे व्यवसाय एवं प्रक्रियाओं में लिप्त बच्चों के पुर्नवास पर ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। बच्चों की समस्याओं पर विचार करने के लिए एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रयास उस समय हुआ, जब अक्टूबर 1990 में न्यूयार्क में इस विषय पर एक विश्व शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें 151 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा गरीबी, कुपोषण व भुखमरी के शिकार दुनिया भर के करोड़ों बच्चों की समस्याओं पर विचार–विमर्श किया गया।

ckyJe dkuu

1 बालश्रम निषेध व नियमन कानून 1986 – इस कानून के अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के जीवन और स्वास्थ्य के लिए अहितकर 13 पेशे औ 57 प्रक्रियाओं में , नियोजन को निषिद्ध बनाया गया है।ये सभी पेशे और प्रक्रियाएं कानून की सूची में दिए गए हैं।

2 फैक्ट्री कानून 1948 – यह कानून 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के नियोजन को निषिद्ध करता है। इसके अनुसार 15 से 18 वर्ष तक के किशोर किसी भी फैक्ट्री में तभी नियुक्त किए जा सकते हैं, जब उनके पास किसी अधिकत चिकित्सक का फिटनेस प्रमाण पत्र हो। इसके साथ ही इस कानून में 14 से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिए हर दिन साढ़े चार घंटे की कार्य अवधि रखने के साथ ही रात के वक्त उनके कार्य करने पर प्रतिबंध लगाया गया है।

3 भारत में बाल श्रम के खिलाफ कार्रवाई में महत्वपूर्ण न्यायिक हस्तक्षेप 1996 में उच्चतम न्यायालय के उस फैसले से आया, जिसमें संघीय और राज्य सरकारों को खतरनाक प्रक्रियाओं और पेशों में काम करने वाले बच्चों की पहचान करने, उन्हें काम से हटाने और उन्हें गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने का निर्देश दिया गया था।

कड़वे प्रवचनः मुनि तरुण सागर

बतौर उदाहरण–तुम्हारी जेब में 90 रुपए हैं तो उसका आनंद लो। 100 रुपए में जो 10 कम है, इसका दुःख मत करो। 100 करने के चक्कर में मत पड़ो क्योंकि 100 तो पूरे कभी होंगे नहीं, मगर यह हो सकता है कि जो 90 हैं, वे भी चले जाएं। सम्राट सिकंदर के भी 100 पूरे नहीं हुए तो फिर तुम किस खेत की मूली हो ? तुम तो मूली भी बहुत मामूली हो।

मकानों में जिस प्रकार कई कमरों के साथ एक शौचालय भी होता हैं, और शौचालय में जितना समय एक व्यक्ति देता है। इतना ही समय एक व्यक्ति को राजनीति में देना चाहिए। दर–असल जीवन में राजनीति का महत्व शौचालय से ज्यादा कतई नहीं होना चाहिए। कारण की फ्रिज में ज्यादा देर तक रखा हुआ पानी बर्फ बन जाता है, और रात–दिन राजनीति में रचा–पचा आदमी भी घाघ हो जाता है। अगर आप मां–बाप हैं तो बच्चों के साथ आत्मीयता पैदा कीजिए। बच्चों से दूरियां नहीं होनी चाहिए। अपने बच्चों के लिए थोड़ा समय जरूर निकालिए, उनके साथ बैठिए और बतियाइए। क्योंकि आपकी सबसे बड़ी संपत्ति तो वही हैं। पैसा कमाने में इतने मशगूल मत हो जाना कि बच्चे हाथ से निकल जाएं। बच्चे बिगड़ गए तो फिर पैसा कमा कर भी क्या करोगे ? बच्चे को बच्चा इसलिए कहते हैं क्योंकि उसे बचाना पड़ता है। वह स्वयं बचना नहीं जानता । उसे बुरी नजर और बुरी संगत से बचाइए, वरना कल तुम्हारा बड़ा बुरा होगा।

मानव मन के बोल

सेवा के शुरूआती साथी

गतांक से आगे.....

उदयपुर से बाँसवाडा की दूरी 164 किमी थी, तो मेरे मन में भगवान ने एक प्रेरणा दे दी, ये सभी प्रेरणा ईश्वर देता है। आइन्सटीन को विज्ञान की प्रेरणा ईश्वर ने दी, महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता ईश्वर ने बनाया। डरें नहीं, गुस्सा नहीं करें, भले ही कोई शरीर की हिंसा कर दे। अँग्रेज सैनिक थप्पड़ रखे तो खा लेना, पर मारना मत, बहुत कठिन बात है। लेकिन उन्होंने सिखायी हमें। क्रान्तिकारी यदि नहीं होते तो भारत आजाद कभी नहीं होता। 7 लाख क्रान्तिकारियों ने देश के लिये अपनी जानें कुर्बान कर दी।

मैं तो अण्डमान में भी गया था। बताऊँगा आपको आगे कि पंक्तियों में सेल्युलर जेल की कैसी काल कोठरियाँ, 8गु8 में वीर सावरकर जी 10 साल तक, कितनी यातनाएँ दी, कई लोगों का बलिदान हो गया, कई लोगों की जानें चली गई, कई लोग छुट–छुट कर मर गये। तो जैसे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को, भगत सिंह को, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को भगवान ने प्रेरणा दी कि ये करना है, वैसे ही मेरे मन में आया कि बाजार से टेप रिकॉर्डर खरीद कर ले आते हैं। अपनी बातें टेप रिकॉर्डर में रिकॉर्ड कर देते हैं और वो कैसेट, अपने भाई साहब की कृपा हो गई। पाँच सौ रूपये में लाईफ मेम्बर बने, ये तकलीफ इनको देंगे, एक पैकेट में बान्ध करके इनको दे देंगे। ये रोड़वेज बस स्टेण्ड पर दे देंगे और उदयपुर से, उस समय में या तो प्रशान्त सेवा करने वाला या कल्पना या कमला या जगदीश जी आर्य चार ही जने थे। सोहन लाल जी विजयवर्गीय साहब भी थे, थोड़े बहुत समय वो भी आते थे। सोहन लाल जी पूर्बिया साहब उस समय सरकारी नौकरी में ही थे मलेरिया इंस्पेक्टर, वो भी कभी–कभी पधारते थे, ये नारायण सेवा का परिवार था। राम लाल जी गुप्ता साहब, हमारे शान्ता बाई के पति देव जी, पड़ोस में दूसरे भाई साहब भेराजी ।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

चाहे व्यक्ति हो या विश्व, कोई ऐसा नहीं है, जो शांति नहीं चाहता, लेकिन मुझे लगता है कि कोई ऐसा नहीं है, जो सचमुच में शांति चाहता है। शांति की इच्छा तो हर कोई रखता है, लेकिन इसे चाहता कोई नहीं है। हर कोई इससे बुरी तरह से घबराता है। इसे ग्रहण करके इसके साथ रहने का साहस किसी में नहीं है। इसके बावजूद हर कोई यही करता है। कि उसे शांति चाहिए।

हम दार्शनिकों के पास जाते हैं। साधु–महात्माओं के पास जाते हैं। शिक्षक और तांत्रिकों के पास जाते हैं और उनके पाँवों पर अपना मस्तक रखकर गिड़गिड़ाते हैं कि 'हम क्या करें कि शांति मिले?' 'हम क्या करें कि शांति मिले,' अपने आप में ही विरोध से भरा हुआ वाक्य है। शांति करने से नहीं मिलती। शांति के लिए तो जरूरी है कि आप जो कर रहे हैं, उसे करना बन्द कर दें। कुछ न करने की प्रक्रिया में शांति निहित है, करने की प्रक्रिया में नहीं। जब हम कुछ करने की सोचेंगे, तो उस करने के दौरान अशांतियाँ उत्पन्न होंगी। शांति के लिए तो जरूरी है कि करना बंद कर दिया जाए और हम हैं कि अपने गुरु से पूछ रहे हैं कि 'हम क्या करें कि शांति मिले।'

यदि न करना ही शांति प्राप्त करने का तरीका है, तो क्या हम सचमुच न करने की स्थिति को स्वीकार करने को तैयार हैं? बिल्कुल भी नहीं। यहाँ न करने से मेरा तात्पर्य अकर्मण्यता से नहीं है।

शांति के लिए एक बहुत प्यारा शब्द है–'अमन'। अमन का अर्थ ही है 'जहाँ' मन न हो। जहाँ मन नहीं होगा, वहाँ शांति होगी और जहाँ मन होगा, वहाँ शांति नहीं रह सकती। ये दानों एक जगह बैठ ही नहीं सकते। जन्मजात विरोध है इस दोनों का और हम हैं कि इन दोनों को एक–साथ पाना चाहते हैं। तो फिर भल यह संभव कैसे होगा?

यदि कोई व्यक्ति सचमुच में शांति पाना चाहता है, तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे ऐसा करने से रोक नहीं सकती। यह कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है, जिसका बिना मोल चुकाए आप पा नहीं सकते हैं।

सुविचार

जो मनुष्य हंसी उड़ाने वालों को शिक्षा देता है वह स्वयं अपमानित होता है। दुर्जनों को चेतावनी देने वाला अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है & ckbfcy

uhfr opu

अपनी स्त्री, भोजन और धन इन्हीं तीनों में संतोष करना चाहिये। विद्या पढ़ना, जप करना/कराना और दान देना इन तीनों में संतोष नहीं करना चाहिये।

& pk.kD; uhfr

संतुष्ट मन वाले के लिए सदा सभी दिशाएँ सुखमयी हैं, जैसे जूता पहनने वालों के लिए कंकर और कांटे आदि से दुःख नहीं होता।

& JhenHkkxor xhrk

सरिता को मिलेगी नई जिंदगी

उदयपुर। गाँव चन्द्रशाही शेरागडा, जिला गंजम (उडिसा) के रहने वाले गरीब माता–पिता के पांव तले जमीन

उस समय खीसक गई जब उन्हें पता चला कि उनकी (21) वर्षीय बेटी सरिता के एक वॉल्व खराब है। यह बात उन्हें तब पता चली जब कोटक व बेंगलुरू के अस्पतालों में इलाज के बाद उन्होंने जयपुर के एक अस्पताल में जाचं करवाई। डॉक्टरो ने उन्हें बताया कि यदि ऑपरेशन में अब भी शीघ्रता नहीं की गई तो सासों की ड़ोर कभी भी टुट सकती है।

सरिता के पिता टूना दश पेन्टींग का कार्य कर महज सात हजार रूपये महिना कमाते है व पॉंच सदसीय परिवार का पोषण करते है। सरिता बीमार रहने लगी दिन ब दिन कमजोर होने लगी। तब इसे अस्पतालों में दिखाया गया, लेकिन दवा से कोई लाभ नही हुआ। समय बीतता गया, और धीरे–धीरे सरिता ने खाना–पीना भी कम कर दिया, फिर अस्पतालो मे दिखाकर इलाज तो हुआ पर राहत नही मिली। कुछ समय बाद सांस लेने में भी तकलीफ होने लगी। इस पर उसे जयपुर के नारायण हृदयालय मे बताया यहां डॉक्टरो ने बताया कि वॉल्व में खराबी होने के कारण तुरन्त ऑपरेशन की सलाह दी। उन्होंने ऑपरेशन पर 2 लाख 97 हजार का खर्च बताया, यह खर्च इस परिवार के लिए बुते से बाहर था। तब इन्हें साधना टी.वी द्वारा सेवा परमो धर्म (ट्रस्ट) उदयपुर के निःशुल्क प्रकल्पों की जानकारी मिली। पिता टूना दश ने उदयपुर आकर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल से सम्पर्क कर उन्हें स्थिति से अवगत कराया और सहायता का आग्रह किया। इस पर श्री अग्रवाल ने परिवार की स्थिति को देखते हुए तुरन्त ट्रस्ट की और से सरिता को पिता के साथ निःशुल्क उपचार के लिए बिना विलंब किये जयपुर भिजवाया।

क्यों होता हैं पितृदोष

पितृ दोष के कारण परिवार में किसी की अकाल मृत्यु होने से, अपने माता–पिता आदि सम्माननीय जनों का अपमान करने से, मरने के बाद माता–पिता का उचित ढंग से क्रियाकर्म और श्राद्ध न करने से, उनके निर्मित वार्षिक श्राद्ध न करने से पितरों का दोष लगता है।

इसके फलस्वरूप परिवार में अशांति, वंश वृद्धि में रूकावट, आकस्मिक बीमारी, संकट, धन में बरकत न होना, सारी सुख सुविधाए होते हुए भी मन असंतुष्ट रहना आदि पितृ दोष का कारण हो सकता है। पितृ दोष कुंडली योग यदि किसी जातक की कुंडली में पितृदोष होता है तो उसे अनेक प्रकार की परेशानियां, हानियां उठानी पड़ती है। घर में कलह, अशांति रहती है। रोग–पीड़ा पीछा नहीं छोड़ती है। घर में आपसी मतभेद बने रहते हैं। कार्यों में अनेक प्रकार की बाधां उत्पन्न होती है। अकाल मृत्यु का भय बना रहता है। संकट, अनहोनियां, अमंगल की आशंका बनी रहती है। संतान की प्राप्ति में विलंब होता है। घर में धन का अभाव भी रहता है। अनेक प्रकार के महादुखों का सामना करना पड़ता है।

firnk"k dk y{k.k & घर में आय की अपेक्षा खर्च बहुत अधिक होता है। घर में लोगों के विचार नहीं मिल पाते जिसके कारण घर मे झगडे होते रहते हैं। अच्छी आय होने पर भी घर में बरकत नहीं होती जिसके कारण धन कत्रित नहीं हो पाता। संतान के विवाह में काफी परेशानियां और विलंब होता है। शुभ तथा मांगलिक कार्यों में काफी दिक्कते उठानी पड़ती है। अथक परिश्रम के बाद भी थोड़ा–बहुत फल मिलता है। बने–बना काम को बिगड़ते देर नहीं लगती।

गुरु के जीवन में आने पर प्रेम जागेगा व श्रद्धा उत्पन्न होगी

जब भी हम किसी को गुरु बनाने जाएंगे, हमारा मन हमें टोकेगा, रोकेगा और हो सकता है बाधा पहुंचाए, क्योंकि गुरु बनाते ही हम किसी के प्रति समर्पित हो जाते हैं। उसके शब्द हमारे शब्द बन जाते हैं। गुरु की हां और ना में हमारी भी स्वीकृति, अस्वीकृति जुड़ जाती है। यदि हम मन का कहना नहीं मानते तो वह अड़चनें पैदा करता है। गुरु के जीवन में आते ही प्रेम और भक्ति का अभ्यास सरल होने लगता है। हम कर्मकांड से थोड़ा ऊपर उठकर भक्तियोग की ओर चलने लगते हैं। गुरु बनाना अपने आप में एक कर्मकांड है, लेकिन इसकी प्रतिछाया में योग बसा है। हम तीर बन जाते हैं और गुरु धनुष। बिना धनुष की तीर का कोई महत्व नहीं है, लेकिन जब गुरु रूपी खिंचे हुए धनुष पर शिष्य रूपी तीर चढ़ता है तो उसकी यात्रा फिर परमात्मा ही होती है। जैसे ही हम गुरु के प्रति समर्पित हुए, हमारी समग्र शक्ति गुरु की शक्ति से मिल जाती है और उनकी हमसे। यह सही है कि गुरु के जीवन में आने पर पहले प्रेम जागेगा और फिर श्रद्धा उत्पन्न होगी। प्रेम और श्रद्धा में फर्क है। प्रेम–प्रेमिका सिर्फ प्रेम करते हैं, उनके बीच श्रद्धा नहीं रहती, इसलिए एक दिन आप उनकों अलग–अलग भी पाएंगे। लेकिन जैसे ही प्रेम में श्रद्धा जुड़ी, तब हमारी प्राण ऊर्जा ऊपर उठेगी और सीधे आत्मा से

मिल जाएगी। इसीलिए प्राणायाम करते समय श्रद्धा बहुत जरूरी है। जिस गुरु मंत्र के साथ प्राणायाम किया जाए, उसमें श्रद्धा हो तो ऊर्जा मूलाधार चक्र से सहस्त्रार तक आसानी से उठ जाएगी। इसमें संसार से कुछ भी नहीं छूटेगा, लेकिन परमात्मा से जुड़ाव जरूर हो जाएगा।

मन का उत्सव

¼ekuo /kel Ük[kyk dk ipe ¼5½ i|"i½

xrkd l vkx----

कितने साधक लग रहे हैं, कमला देवी जी, प्रशांत भैया, वंदना जी, जगदीश जी आर्य साहब, देवेन्द्र चौबीसा जी, हमारे आदरणीय मीना जी, ये हमारे गायक महोदय और इंचार्ज महोदय संतोष जी दांत्या साहब, सुरेश भैया, ये हमारे मदन भैया। मैं चाहूँगा सब अपना अपना शुभ नाम बताने की कृपा करें ताकि हमारे लाखों करोड़ों पाठक आपका शुभ नाम पढ़ सकें कि किनकी वजह से यह इंसानियत की पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत हुई है। अपना अपना शुभनाम बतावें।

l rk"k %& जी संतोष, गुरूदेव जी के चरणों में सादर नमन करता हूँ।

l j'k %& मैं सुरेश, गुरूदेव को प्रणाम।

fxfjjkt %& प्रणाम गुरूजी, गिरिराज।

ehuk %& मैं मीना प्रणाम करती हूँ बाऊजी आपश्री के चरणों में।

x: th %& आप इंसानियत को प्रणाम कर रही हैं–मीना जी। इंसानियत की कथा इन पंक्तियों में आपका शुभनाम पढ़कर करोड़ों महानुभाव को यह आभास हो रहा है कि यह इंसानियत की कथा किनकी वजह से आपके सामने प्रस्तुत हो रही है।

nhid %& मैं प्रणाम करता हूँ गुरूदेव जी।

vkun %& प्रणाम गुरूदेव।

eghe %& मैं सादर वंदन करता हूँ आपश्री को। मैं महीम जैन, नारायण सेवा संस्थान का छोटा सा साधक।

x: th %& ये कुछ शुभनाम इन साधकों के हैं। इनसे भी अधिक, कई साधक मिलकर यह प्रयत्न कर रहे हैं कि हम आपके मनमंदिर तक पहुँच सकें। आपके रोम–रोम में जो तरंगें उठ रही हैं उससे आप सकारात्मक सोच रख सकें। सफलता का सोपान यही है।

उठ नर अंबर छू जरा खोल गगन के द्वार।

सुर तो सधे, क्यों ना गाऊं में।
सुर के बिना जीवन सूना, सुर के बिना।
सुर के बिना जीवन सूना, सुर तो सधे।

सुर ना सधे। बचपन में, एक पिक्चर में गाना सुना था मैंने रचनाकार से, गायक साहब से, संगीतकार साहब से माफी मांगी। मैंने कहा–मैं तो कहना चाहता हूँ सुर तो सधे। इंसान का सुर सध जाता है। एक अच्छा कारीगर कई तरह की ईंटों से भव्य देवालय का निर्माण कर देता है और कमजोर कारीगर औजारों और ईंटों की आलोचना करता है, और अपना कार्य नहीं कर पाता। आप कठिनाई से डरियेगा मत, आप घबराइयेगा मत, आप मन में दुर्बलता मत लाइये, मत कहिएगा कि मैं क्या कर सकता हूँ? आप कहिएगा–परमात्मा मुझसे सब करा सकते हैं।

संगीत मन के पंख लगाये,

ये तो रिमझिम रिमझिम रस बरसायें

सुर की साधना करने से

सुर तो सधे.....................सुर तो सधे

आपका हमारा परिवार, समाज, राष्ट्र, हमारे पड़ोसी, सगे संबंधी, परमात्मा ने ब्लड रिलेशन से जो संतान दी है। पुत्र–पुत्री में भेद मत करना, पुत्र–पुत्री में भेद करना मानवता का धर्म नहीं है, ये राक्षसीवृति है। जो पुत्र–पुत्री भगवान ने कृपा करके दिया है, उनको अच्छे संस्कार दीजियेगा, अच्छी शिक्षा दीजियेगा, उनको राष्ट्र भक्त, समाज भक्त बना दीजियेगा।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–रोशन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

शिशु भी जानते हैं सही-गलत के बारे में

लंदन। यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन के शोध में दावा किया गया है कि 15 महीने के शिशु को भी इस बात का अहसास होता है कि क्या सही है और क्या गलत। इसके अनुसार, छोटे बच्चों को भी खाने–पीने की चीजों के समान–असमान वितरण के बारे में समझ होती है। समान वितरण नहीं होने पर वे आश्चर्य या नाराजगी भी प्रकट करते हैं। शोध के लिए

शिशुओं को एक ऐसा वीडियो दिखाया गया है जिसमें दूध और पटाखे बांटे गए थे। प्रत्येक बच्चे को खेलने के लिए दो–दो खिलौने दिए गए। उनमें से एक तिहाई बच्चों ने अपना पसंदीदा खिलौना अन्य बच्चों को खेलने को दिया। जबकि दूसरे एक तिहाई बच्चों ने वह खिलौना दूसरे बच्चों को दिया जो उन्हें कम पसंद था। बाकी एक तिहाई बच्चों ने एक भी खिलौना दूसरे बच्चों को खेलने को नहीं दिया। प्रोफेसर ने कहा कि जो बच्चे चीजों के समान वितरण को लेकर तत्पर थे, उन्हीं बच्चों ने अपना खिलौना भी दूसरों को खेलने को दिया।

स्वयं बनाए अपना रास्ता

आपने यह कहावत ज़रूर सुनी होगी –

yhd NkfM rhuk py] 'kk;j] flg] l irA ;kuh fd lPpk dfo] 'kj vkj l|i= ge'kk cu cuk, jkLrk dk NkMdj u, jkLrk ij pyr gA ये वे लोग होते हैं, जो अपने लिए खुद रास्ता बनाते हैं और बाद में इनके बनाए गए रास्ते पर दुनिया चलती है। ऐसे लोगों को आप नेतृत्व करने वाला कह सकते हैं। सच तो यही है कि विश्व का आज जितना भी विकास हुआ है, जिसने हमारे जीवन को इतना आसान बनाया है, वह ऐसे ही लोगों के कारण संभव हो सका है, जिन्होंने बने बनाए रास्ते पर चलने से इंकार कर दिया था। हालांकि रास्ते तो थे और वे चाहते, तो उसी पर चलकर अपना जीवन पूरा कर सकते थे, लेकिन उन्हें वह स्वीकार नहीं था। उनके अन्दर कुछ कर गुज़रने का जो तूफान उठ रहा था, उसके कारण उन्होंने नए रास्ते पर चलने का निर्णय लेकर दुनिया के लिए एक नया रास्ता तैयार किया।

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.) सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com